Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

श्रीहर्ष कृत रचनाएँ एवं नाटकीय कथावस्तु (एक विश्लेषण)

Dr. Kumari Pramila*

Flat No. 606/F, Mundeshwari Enclave, Khajpura, Patna-14, Bihar

सार – ***शास्त्रीय दृष्टि से संस्कृत नाट्य साहित्य में रत्नावली नाटिका अत्यंत सफल नाटिका मानी जाती है। रत्नावली नाटिका संस्कृत के प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष द्वारा रचित है। महाकवि बाण ने अपने हर्षचरित नामक काव्य में हर्ष की काव्य प्रतिभा का वर्णन किया है। हर्ष के दरबार में बाणभट्ट के अतिरिक्त मयूर तथा मातक आदि विद्वान इनकी राज्यसभा की शोभा बढ़ाते थे। श्रीहर्ष का जन्म सारस्वती नदी के किनारे कुरुक्षेत्र के निकट थानेश्वर में 490 ई. के लगभग हुआ था। इनके पिता महाराज प्रभाकरवर्धन तथा माता यशोमती थी। इनके अग्रज राज्यवर्धन तथा अनुजा राज्यश्री थी। हूणों का दमन करने हेतु प्रभाकरवर्धन ने अपने जयेष्ठ पुत्र राज्यवर्धन को भेजा साथ में श्रीहर्ष भी गये थे। पिता की बीमारी की सूचना पाकर हर्षवर्धन राजधानी वापस लौट आए। यहाँ*** 604 ***ई. में प्रभाकरवर्धन का स्वर्गवास हो गया।***

----------X----------

परिचय

श्रीहर्ष द्वारा रचित रत्नावली नाटिका एक उत्तम कृति है। यह कहा जाता है कि रत्नावली नाटिका संस्कृत के विद्वान कवि हर्ष द्वारा रचित है। संस्कृत नाट्य साहित्य में श्रीहर्षवर्धन या श्रीहर्ष देव का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। हर्षवर्धन एक सफल शासक होने के साथ-साथ एक सफल महाकवि भी थे। इन्होंने रत्नावली, प्रियदर्शिका नामक नाटिका एवं नागानंद नामक नाटक की रचना की। सम्राट हर्षवर्धन स्थाण्वीश्वर एवं कान्यकुब्ज में राज्य करते थे। इनका राज्य काल 606 ई॰ से 648 ई॰ तक माना जाता है। इनके समय में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था, और 630 ई॰ से 645 ई॰ तक भारतवर्ष में रहा। हर्षवर्धन के राजकवि महाकवि बाणभट्ट ने हर्षचरित नामक ग्रंथ में उनके जीवन से संबंधित अनेक घटनाओं पर प्रकाश डाला है। प्रभाकरवर्धन अत्यंत प्रतापी एवं यशस्वी सम्राट थे। उन्होंने हूणों, गुर्जरों तथा मालव आदि पर विजय प्राप्त की थी। 604 ई॰ में प्रभाकरवर्धन का स्वर्गवास होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र यानी हर्षवर्धन का ज्येष्ठ भाई राज्यवर्धन सिंहासन पर आसीन हुए। इनकी बहन का विवाह कन्नौज के भूपति गृहवर्मा से हुआ था। मालवा के महाराज देवदूत ने राज्यश्री (हर्षवर्धन या राज्यवर्धन की बहन) के पति का वध कर दिया और राज्यश्री को बंदी बना लिया था । इस पर क्रुद्ध होकर राज्यवर्धन ने मालवा पर आक्रमण किया और विजयश्री प्राप्त की। परंतु जब राज्यवर्धन मालवा से अपनी राजधानी लौट रहे थे तब मालवा अवधेश के मित्र बंगाल के राजा शशांक ने उनकी हत्या कर दी। तत्पश्चात् राज्यवर्धन के स्थान पर उनके कनिष्ठ भाई हर्षवर्धन सिंहासन आसीन हुए और समस्त उतरी भारत को जीत कर महाराजाधिराज की उपाधि प्राप्त की। तभी से एक नए संवत् की स्थापना की। जब हर्षवर्धन राज्य सिंहासन पर आसीन हुए थे उस समय उनकी अवस्था मात्र सोलह वर्ष की थी। उन्होंने जिस साहस, धैर्य एवं शौर्य से कार्य किया, वह वस्तुतः सराहनीय था। सम्राट हर्षवर्धन एक योग्य शासक के साथ ही प्रतिष्ठित कविरत्न एवं विद्वान भी थे। उनके समय में देश ने पर्याप्त उन्नति की थी। शिक्षा में अत्यंत ही प्रगति हुई और उच्च कोटि के साहित्य की सृष्टि हुई। उनकी साहित्य में अत्यधिक रुचि थी इसीलिए उन्होंने तत्कालीन महाकवियों को आश्रय दिया और अपनी सभा में पंडितों तथा कवियों को सम्मानित किया। सम्राट हर्षवर्धन की कीर्तिकौमुदी उनके काव्य मार्ग के द्वारा अब भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

हर्ष ने प्रियदर्शिका, रत्नावली एवं नागानंद इन तीन कृतियों को प्रस्तुत कर संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठा प्राप्त की ।

www.ignited.in

प्रियदर्शिका

प्रियदर्शिका चार अंको की नाटिका है। इसका नामकरण नाटिका की नायिका प्रियदर्शिका के आधार पर किया गया है। यह महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध कृति मालविकाग्निमित्रम् से पर्याप्त प्रभावित है। इसमें वत्स के सम्राट उदयन और राजा दृढवर्मा की पुत्री प्रियदर्शिका की प्रणय कथा का अत्यंत सरल एवं रोचक वर्णन हुआ है।

प्रथम अंक के प्रारंभ में कंचुकी सूचित करता है कि प्रियदर्शिका के पिता अंग देश के महाराज दृढवर्मा ने अपनी पुत्री को कौशांबी के राजा वत्सराज उदयन को देने का निश्चय किया था, पर कलिंग के राजा ने प्रियदर्शिका के लिए कई बार याचना भी की थी। उस याचना से उपेक्षित होकर क्रोधित कलिंग राज ने दृढवर्मा पर आक्रमण कर उसे बंदी बना लिया। दृढवर्मा का कंचुकी ने उनकी पुत्री प्रियदर्शिका को बचा लिया। वत्सराज उदयन को अवंती के राजा प्रद्योत ने जीतकर बंदी बना लिया परंतु उदयन प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता के साथ किसी प्रकार भाग निकला और उसे अपनी रानी बना लिया। महाराज उदयन का सेनापति विजयसेन प्रियदर्शिका को उदयन को समर्पित करता है। वत्सराज उदयन प्रियदर्शिका को वासवदत्ता के संरक्षण में दे देते हैं और कहते हैं कि जब प्रियदर्शिका विवाह के योग्य हो जाए तो उसे सूचित किया जाए।

द्वितीय अंक में राजा उदयन विदूषक सहित उपवन में परिभ्रमण हेतु जाते हैं। वहाँ प्रियदर्शिका का दर्शन होता है। प्रियदर्शिका को महारानी वासवदत्ता ने इंदीवरीका के साथ पूजन हेतु कमलपुष्प लाने भेजा था। प्रियदर्शिका कमलपुष्प चयन करते समय भौरों द्वारा बाधित होती है, और चीखने लगती है। उसी समय राजा उदयन सामने आकर प्रियदर्शिका की भौरों से रक्षा करने के क्रम में उसका आलिंगन करते हैं और उसके बाद राजा उपवन से चले जाते हैं। पुनर्मिलन के लिए उत्कंठित हो जाते हैं।

तृतीय अंक में वासवदत्ता की सखी सांकृत्यायनी ने महारानी वासवदत्ता के मनोविनोद के लिए उदयन से संबंधित एक प्रणयपरक एक नाटक का आयोजन किया। इसमें वासवदत्ता का अभिनय प्रियदर्शिका और उदयन का अभिनय मनोरमा को करना था। विदूषक एवं मनोरमा की चालाकी से नाटक खेले जाने समय विदूषक के साथ राजा उदयन छिपकर वहां पहुंच गए और मनोरमा के राजकीय परिधान धारण कर उसके स्थान पर स्वयं राजा उदयन अभिनय करने हेतु पहुंच जाते हैं। अभिनय के समय राजा के भावावेश के कारण महारानी वासवदत्ता को संदेह हो जाता है और सच्चाई सामने आ जाती है। वासवदत्ता रुष्ट हो जाती है और विदूषक तथा प्रियदर्शिका को कारागार में डलवा देती है।

चतुर्थ अंक में प्रियदर्शिका कारागार में निराश होकर विषपान करने के लिए सोचती है। इधर महारानी वासवदत्ता अपनी माता के पत्र को पाकर दुखी होती है। जिसमें लिखा है कि उनका मौसा दृढवर्मा अब भी कलिंग के कारागार में है। राजा उदयन वासवदत्ता की चिंता को दूर करते हुए कहते हैं कि उसने कलिंग को नष्ट करने एवं दृढ़वर्मा को मुक्त करने के लिए सेना भेज दी है। इसी बीच उदयन का सेनापति कलिंग पर विजय प्राप्त कर दृढवर्मा के कंचुकी के साथ आता है। इसी समय सूचना मिलती है कि प्रियदर्शिका अपने जीवन से खिन्न होकर विषपान कर लिया है। महारानी वासवदत्ता यह सुनकर शीघ्र उदयन को बुला लेती है क्योंकि उदयन ने नागलोक से विषचिकित्सा की विद्या सीखी थी। मृतप्राय प्रियदर्शिका को राजा शीघ्र ही अपने मंत्रों के द्वारा उसके विष के प्रभाव को हटाकर उसे चैतन्य में लाता है। अपनी मौसेरी बहन प्रियदर्शिका को प्राप्त कर महारानी वासवदत्ता अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है। वह वासवदत्ता अपने मौसा राजादृढ़ वर्मा की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रियदर्शिका का हाथ वत्सराज उदयन के हाथ में दे देती है। इस प्रकार राजकुमारी प्रियदर्शिका और वत्सराज उदयन का शुभ परिणय हो जाता है। और भरत वाक्य के साथ नाटिका समाप्त होती है।

इस नाटिका के पठन के पश्चात् हम इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि हमारे विचार स्थिति परिस्थिति के अनुसार अवसर आने पर परिवर्तित होते हैं। जब हम कुंठित रहते हैं तो सूक्ष्म गलतियों पर भी किसी को बड़ी से बड़ी सजा दे देते हैं। जैसे इस नाटिका के तृतीय अंक में परिणय अभिनय में जब वासवदत्ता को पता चलता है कि उदयन ही मनोरमा के वेश में है और प्रियदर्शिका ही वासवदत्ता के वेश में है और इस अभिनय में विदूषक की चाल है, तो वह वासवदत्ता गुस्से से विदूषक एवं प्रियदर्शिका को कारागार में डाल देती है। विदूषक ने तो सिर्फ मनोरंजन के लिए प्रणयपरक नाटक का अभिनय किया था। इसका इतना बड़ा परिणाम होगा कि वासवदत्ता क्रोध में आकर विदूषक एवं प्रियदर्शिका को ही कालकोठरी में डाल दे। यह कहाँ तक उचित है ? इसी अपमान से कुंठित होकर प्रियदर्शिका ने विषपान कर लिया। यह तो साबित होता है कि हर एक मनुष्य प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान का भूखा होता है रोटी का नहीं। रोटी का भूखा तो निम्न वर्ग के लोग होते हैं। यही कारण है कि जब प्रियदर्शिका को वासवदत्ता ने कारागार में डाल दिया तो इससे उसके आत्मसम्मान को ठेस पहूँची। जिसके

परिणामस्वरूप प्रियदर्शिका ने विषपान कर लिया। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जब इंसान के अंतःकरण और उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो भावावेश में आकर वह कोई भी अनुचित कदम उठा लेता है। हालाँकि हमें भावावेश में कोई गलत कदम नहीं उठाना चाहिए । बल्कि धैर्य एवं विश्वास के साथ संकट का निवारण करना चाहिए।

दूसरी बात इस नाटिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि सामने वाला यदि हमारा कोई रिश्तेदार हो तो हम बड़े से बड़े कदम उठा लेते हैं। जिस फैसले के लिए वह हम सोच भी नहीं सकते हैं। इस नाटिका के चतुर्थ अंक में जब वासवदत्ता को यह पता चलता है कि प्रियदर्शिका उसकी अपनी ही मौसेरी बहन है तो वह प्रियदर्शिका का विवाह अपने प्रेमी उदयन से ही करवाने के लिए तैयार हो जाती है। अब यह बताइए कि कौन प्रेमिका अपने प्रेमी को दूसरे के हाथ में सौंपना चाहेगी? निश्चित रूप से कोई नहीं। वासवदत्ता का यह फैसला यह बताता है कि उसमें त्याग और प्रेम की भावना भी है।

रत्नावली

हर्ष की दूसरी कृति नाट्य कृति रत्नावली एक बहुत ही सफल नाटिका है। इसकी नाट्य कलात्मकता प्रियदर्शिका नाटिका से अधिक परिष्कृत है। नाट्यशाश्त्रीय नियमों का पालन इसमें इतना सर्वांगीण हुआ है कि दशरूपक तथा साहित्यदर्पण में इससे सर्वाधिक उदाहरण दिए गए हैं। रत्नावली नाटिका की कथावस्तु सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली तथा महाराज उदयन की प्रेम कथा पर आधारित है। नाटिका के प्रथम अंक में राजा उदयन का मंत्री यौगन्धरायण सिद्ध पुरुष के मुख से यह सुनकर कि सिंहल देश की राजकन्या रत्नावली का पति जो व्यक्ति होगा वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा। प्रभू भक्त मंत्री यौगन्धरायण उक्त घोषणा पर दृढ़ आस्था एवं पूर्ण विश्वास राज्य की उन्नति के लिए रत्नावली के साथ उदयन का विवाह कराने का संकल्प लेता है। यौगन्धरायण की यह सोच उसकी स्वामीभक्ति को प्रदर्शित करती है।

रत्नावली नाटिका के चतुर्थ अंक में वासवदत्ता का रत्नावली के प्रति प्रेम, त्याग और अपूर्व योगदान की कथा वर्णित है । वासवदत्ता अपनी बहन रत्नावली को ना पहचानने के कारण जो कष्ट देती है उस पर क्षुब्ध होती है। वह रत्नावली को बहन कह कर गले लगाती है, और बहुमूल्य आभूषणों से सुसज्जित कर उसे उसका हाथ राजा को पकड़ाते हुए निवेदन करती है कि वो रत्नावली को स्वीकार कर उसके साथ अत्यंत स्नेहपूर्ण व्यवहार करें जिससे उसे दूरस्थ बंधुओं की याद ना आए। नाटिका के तृतीय अंक में वासवदत्ता में महारानी होने के बावजूद भी क्षमायाचना का गुण है। उसका यह गुण अत्यंत ही सराहनीय है। वासवदत्ता को अपने आचरण पर भी ग्लानि एवं पाश्चाताप होता है । वह जब विदूषक और सागरिका को कारागार में डाल देती है तब वह पश्चाताप की अग्नि में जलने लगती है। कौन महारानी किसी को सजा देने पर पश्चाताप की अग्नि में जलती है ? इसमें गर्व, छल, ईर्ष्या का नामोनिशान नहीं है। वह कुछ समय तक तो सोचती है कि इसके अनंतर वह निश्चय करती है कि मुझे अपनी अशिष्टता के लिए राजा के समक्ष जाकर क्षमायाचना करनी चाहिए।

इस प्रकार हम कह सकते है कि हर्ष की रत्नावली ही सर्वप्रथम सफल नाटिका है। जिसमें शाश्त्रीयता का पूरी तरह से पालन किया गया है। साथ ही रंगमंच पर अभिनीत होने योग्य सभी विशेषताएं इस में पाई जाती है। अतः हर्ष को एक क्षमता संपन्न सफल नाट्यकार कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

नागानंद

पांच अंकों का नाटक है। इसमें विद्याधरराज के पुत्र जीमूतवाहन एवं मलयवती (सिद्धराज की पुत्री) की प्रणय कथा और जीमूतवाहन का अपूर्व त्याग अंकित है। इसमें गरुड़ देवता को खुश करने के लिए नागों की बलि देने को रोकने के लिए राजकुमार जीमूतवाहन द्वारा अपने शरीर त्याग की कहानी है। जीमूतवाहन एवं मलयवती के विवाह के पश्चात् चतुर्थ अंक में कथावस्तु में अचानक एक नवीन मोड़ ले लेती है। नायक जीमूतवाहन मित्रावसु के साथ जब समुद्र तट पर परिभ्रमण के लिए जाते हैं, तो वहाँ हड्डियों की एक विशाल ढेर को देखकर जीमूतवाहन मित्रावसु (मायावती का भाई है) से पूछता है। उससे जीमूतवाहन को यह जानकारी मिलती है कि नागराज वासुकी ने गरुड़ के डर से उसे खाने के लिए प्रतिदिन एक नाग देने का नियम बना दिया है। यह अस्थियाँ उन्ही खाए हुए नागों की है। यह सुनकर जीमूतवाहन दुखी हो जाता है। एक दिन जीमूतवाहन एक वृद्धा के रोने की आवाज सुनकर विचलित हो जाते हैं। ज्ञात करने पर उन्हें पता चलता है कि उस वृद्धा के पुत्र शंखचूड़ का आज गरुड़ के द्वारा गाए जाने का क्रम है। इससे दुखी होकर जीमूतवाहन उसके स्थान पर स्वयं को प्रस्तुत करता है। गरुड़ उस जीमूतवाहन को उठाकर मलयगिरी पर ले जाता है। जीमूतवाहन अत्यधिक घायल हो जाता है। उसके प्राणों की रक्षा के लिए गरुड़ अमृत लेने के लिए चला जाता है और भविष्य में कभी भी हिंसा न करने का व्रत गरुड़ ले लेता है। इसी समय भगवती गौरी प्रकट होकर जीमूतवाहन को जीवित कर देती है, और विद्याधर को चक्रवर्ती सम्राट बना देती है। इधर गरुड़ भी आकर अमृत

www.ignited.in

वृष्टि करता है जिससे पहले खाए हुए सभी नाग जीवित होते हैं।

इस नाटक में जीमूतवाहन का त्याग इतिहास प्रसिद्ध है। आज इस आधुनिक युग में नाग की बलि को रोकने के लिए कौन अपने शरीर का त्याग करेगा ? वृद्धा के रुदन को सुनकर अपने शरीर को गरुड़ का भोजन बनने के लिए कौन प्रस्तुत करेगा ? यह त्याग तो अपूर्व है। अपने इसी त्याग के कारण ही तो विद्याधर का पुत्र जीमूतवाहन का नाम नागानंद नाटक में अमर हो गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीहर्ष की तीनों ही रचनाएँ रत्नावली, प्रियदर्शिका नाटिका और नागानंद नाटक नाट्यसाहित्य में अपूर्व स्थान रखता है। रत्नावली नाटिका संस्कृत साहित्य की एक सुप्रसिद्ध निर्मिती है। इसमें एक आदर्श नाटिका के सारे गुण विद्यमान है। अपने इन्हीं गुणों के कारण रत्नावली और प्रियदर्शिका दोनों ही नाटिका क्षेत्र में अनुपम अद्वितीय एवं प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

किसी भी नाटक का अन्त भरतवाक्य से होता है। नाटक के अंत में अभिनय की समाप्ति होने पर आशीर्वादात्मक श्लोक के रूप में पद्य का गान किया जाता है। इस अर्थ के अनुसार नाटक के अभिनेता अथवा पुरोहित दर्शकों को आशीर्वाद देते हैं। इस आशीर्वाद में मंगल कामना होती है। आज भी हमारे समाज में पूजा पाठ के उपरांत जनकल्याण हेतु पुरोहितों द्वारा पूजन एवं आरती के पश्चात् जो आशीर्वादात्मक पद्य के रूप में मंगल कामना की जाती है, वह सब तत्कालीन समाज एवं रीति की ही देन है ।

नाटिका में अनेक स्थानों पर उल्लेख किया गया है कि राजा अपनी नायिका का विशेष मान / आदर करता था । सभ्य शिक्षित एवं उच्च वर्ग में नारियों को विशेष प्रतिष्ठा मिलती थी । मनुस्मृति में भी लिखा है ---

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया।।

आज भी हमारे समाज में शिक्षित वर्ग में नारियों को विशेष सम्मान प्रदान किया जाता है । नारियों को सम्मान मिलना / उच्चाशय होना तथा मर्यादा का पालन करना समाज को सुव्यवस्थित रखने की पहली शर्त है। आज भी हम अपने समाज में हम देखते हैं कि नारी को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखने वाला घर या समाज उलझन पूर्ण विसंगतियों का केंद्र बन जाता है। हमसब यह अनुभव करते हैं कि अलौकिक सुख एवं समृधि घर की नायिका एवं नायक दोनों के सम्मिल्लित प्रयास का फल है। प्रियदार्शिका नाटिका के द्वितीय अंक में वह पूजा पाठ नियम उपवास एवं व्रतकाल में राजकीय आभूषण को त्यागकर मंगल सूत्र धारण करती है । आज भी हमसब अपने घर परिवार समाज में स्त्रियों को देखते हैं कि वह व्रतकाल में मंगलसूत्र धारण करना अनिवार्य एवं सौभाग्य का प्रतीक समझती है। ये सब तत्कालीन समाज का ही प्रभाव है।

संदर्भ ग्रंथसूची अथवा सहायक पुस्तकों की सूची

सिन्हा जयश्री – संस्कृत नाटिका विमर्श, संस्कृत विभाग, बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर बिहार, 1986

गिरी कपिलदेव – वृषभानुजा, चौखंबा ओरियंटालिया, दिल्ली, 1989

द्विवेदी शिवबालक – रत्नावली नाटिका, ग्रंथम् रामबाग, कानपुर 1983

रुद्र चंद्रदेव – उषारागोदय (संपादक बाबूलालशुक्ल शास्त्री), भाषा शोधसंस्थान विश्वविद्यालय, जबलपुर

पांडे बैजनाथ – धनंजय विरचित दशरूपकम्, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली,1979

पांडेय कौशलेंद्र सिंह – सिंगभूपाल विरचित कुवलयावली नाटिका, चौखंबा अमरभारती प्रकाशन ,1986

त्यागी अर्चना – नाट्यशास्त्रीय विवेचन(शोध प्रबंध) संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1994

नेगी दीपा – प्रियदर्शिका नाटिका का अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली,1980

बिल्हन – कर्णसुंदरी (संपादक दुर्गा प्रसाद एवं पर्व), काव्यमाला संस्कृत सीरीज, वाराणसी 1988

राजशेखर – विद्धशालभंजिका (संपादक बाबूलाल शुक्लशास्त्री), चौखंबा ओरिएंटालिया, वाराणसी 1976

पांडे रामरत्न – अनुपलब्ध संस्कृतरूपक, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, 2000

विश्वनाथ चंद्रकला – (संपादक बाबूलाल शुक्ल शास्त्री) चौखंबा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 1980

सिंगभूपाल – कुवलयावली, (संपादक कौशलेंद्र पांडेय) अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1986

सहगल मीना – रामचंद्र - गुणचंद्र विरचित नाट्यदर्पण का अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 1978

सागरनंदी – नाटकलक्षणरत्नकोष (संपादक बाबूलाल शुक्ल), चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी 1999

प्रमिला कुमारी – संस्कृत नाटिकाओं का नाट्यशाश्त्रीय अध्ययन, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2006

Corresponding Author

Dr. Kumari Pramila*

Flat No. 606/F, Mundeshwari Enclave, Khajpura, Patna-14, Bihar